षष्ठ अध्याय

आधुनिक खण्डकाव्य-धारा : वर्गीकरण

आधुनिक खण्डकाव्य-धारा तथा वर्गीकरण

आधुनिक खण्डकाव्यों के परिचयात्मक अध्ययन तथा उनके अन्तरंग एवं बहिरंग अवलोकन के पश्चात् उनके वर्गीकरण का महत्वपूर्ण प्रश्न सम्मुख आता है। प्रकाशन-तिथि के कालक्रमानुसार ही तीसरे अध्याय में खण्डकाव्यों का अध्ययन हुआ है। कालक्रमानुसार आधुनिक काल में प्रकाशित खण्डकाव्य निम्नलिखित हैं।

१- एकांतवासी योगी (अनुवाद) : श्रीधर पाठक : सन् १८८६.

२- ऊजड़ ग्राम ,, ,, ,,

३- श्रांत पथिक ,, ,, ,,

४- हरिश्चन्द्र : जगन्नाथदास 'रत्नाकर' : १८९४.

५- प्रेम-पथिक (ब्रजभाषा) : जयशंकर प्रसाद : १९०९.

६- रंग में भंग : मैथिलीशरण गुप्त : १९१०.

७- जयद्रथ-वध : ,, ,,

८- मौर्य विजय : सियारामशरण गुप्त : १९१४.

९- प्रेमपथिक (खड़ी बोली) : जयशंकर प्रसाद : १९१४.

१०- द्रौपदी-चीर-हरण : तपेश्वर त्रिपाठी : १९१५.

११- मिलन : रामनरेश त्रिपाठी : १९१७.

१२- किसान : मैथिलीशरण गुप्त : १९१७.

१३- विकट-भट : मैथिलीशरण गुप्त : १९१८.

१४- महाराणा का महत्त्व : प्रसाद : १९१८.

१५- अनाथ : सियारामशरण गुप्त : १९१८.

१६- अभिमन्यु का आत्मबलिदान : कमलाप्रसाद वर्मा : १९१८.

१७- पथिक : रामनरेश त्रिपाठी : १९२०.

१८- वीर हमीर : रामकुमार वर्मा : १९२०.

१९- ग्रंथि : सुमित्रानंदन पंत : १९२०.

२०- कीचक-वध : शिवदास गुप्त : १९२१.

२१- पंचवटी : मैथिलीशरण गुप्त : १९२५.

२२- आँसू : जयशंकर प्रसाद : १९२५.

२३- अभिमन्यु-वध : रघुनन्दन लाल मिश्र : १९२५.

२४- हिडिम्बा : मैथिलीशरण गुप्त : १९२७.

२५- वक-संहार : मैथिलीशरण गुप्त : १९२७.

२६- वन-वैभव : मैथिलीशरण गुप्त : १९२७.

२७- सैरन्ध्री : मैथिलीशरण गुप्त : १९२८.

२८- स्वप्न : रामनरेश त्रिपाठी : १९२९.

२९- उद्धवशतक : जगन्नाथदास 'रत्नाकर': १९२९.

३०- चित्तौड़ की चिता : रामकुमार वर्मा : १९२९.

३१- आत्मोत्सर्ग : सियारामशरण गुप्त : १९३२.

३२- कुणाल : माहेश्वरीसिंह 'महेश' : १९३२.

३३- सिद्धराज : मैथिलीशरण गुप्त : १९३६.

३४- तुलसीदास : सूर्यकांत त्रिपाठी निराला : १९४०.

३५- नहुष : मैथिलीशरण गुप्त : १९४०.

३६- अभिमन्यु-पराक्रम : देवीप्रसाद बरनवाल : १९४०

३७- काबा और कर्बला : मैथिलीशरण गुप्त : १९४२.

३८- कुरुक्षेत्र : रामधारीसिंह 'दिनकर' : १९४६.

३९- कारा : क्षेमचन्द्र 'सुमन' : १९४६.

४०- नकुल : सियारामशरण गुप्त : १९४६.

४१- विषपान : सोहनलाल द्विवेदी : १९४६.

४२- बंगाल का काल : हरिवंशराय 'बच्चन' : १९४६.

४३- अजित : मैथिलीशरण गुप्त : १९४७.

४४- बरगद की बेटी : उपेन्द्रनाथ 'अश्क' : १९४७.

४५- लक्ष्मण-शक्ति : राधाराम श्रीवास्तव : १९४७.

४६- कर्ण : केदारनाथ मिश्र 'प्रभात' : १९५०.

४७- हिडिम्बा : मैथिलीशरण गुप्त : १९५०.

४८- गोरा-वध : श्यामनारायण पाण्डेय : १९५०.

४९- अशोक : रामदयाल पाण्डेय : १९५१.

५०- रश्मिरथी : रामधारी सिंह 'दिनकर' : १९५२.

५१- रूपछाया : रांगेय राघव : १९५२.

५२- चाँदनी रात और अजगर : उपेन्द्रनाथ 'अश्क' : १९५२.

५३- युद्ध : मैथिलीशरण गुप्त : १९५२.

५४- कैकेयी : शेषमणि शर्मा : १९५२.

५५- कामिनी : नरेन्द्र शर्मा : १९५३.

५६- शकुन्तला : मैथिलीशरण गुप्त : १९५४.

५७- तप्तगृह : केदारनाथ मिश्र 'प्रभात' : १९५४.

५८- शल्यवध : उग्रनारायण मिश्र : १९५४.

५९- पांचाली : रांगेय राघव : १९५५.

६०- प्रयाण : गिरिजाशंकर शुक्ल 'गिरीश' : १९५५.

६१- सिंहद्वार : जीवन शुक्ल : १९५६.

६२- विद्युतोपाख्यान : भगवतीशरण चतुर्वेदी : १९५६.

६३- सती सावित्री : गोपाल पारीक : १९५७.

६४- तांत्या टोपे : लक्ष्मीनारायण 'सुधांशु' : १९५७.

६५- गृहलक्ष्मी : गिरिजाशंकर शुक्ल गिरीश : १९५७.

६६- वनाश्रित : राजेन्द्र आर्य : १९५७.

६७- मैरी का जौहर : आनन्द मिश्र : १९५७.

६८- अग्निपथ : अनूप शर्मा : १९५८.

६९- दशानन : कैलाश तिवारी 'विद्रोही' : १९५८.

७०- वीर लाल चक्रधर : सम्पत सुखारिया : १९५८.

७१- वन-वैभवानी : रामचन्द्र : १९५८.

७२- अमृत पुत्र (प्रभु ईसा) : सियारामशरण गुप्त : १९५९.

७३- कनुप्रिया : धर्मवीर भारती : १९५९.

७४- दानवीर कर्ण : गुरुचरण वैमवाल : १९५९.

७५- प्रेमविजय : सेठ गोविन्ददास : १९५९.

७६- द्रौपदी : नरेन्द्र शर्मा : १९६०.

७७- सुमित्रा : रघुवीरशरण मित्र : १९६१.

७८- प्रह्लाद : विजयसिंह 'सिंह' : १९६१.

७९- रणचण्डी : विश्वनाथ पाठक : १९६१.

८०- कौणार्क : रामेश्वरप्रसाद दुबे : १९६१.

८१- उर्वशी : रामधारी सिंह 'दिनकर' : १९६१.

८२- चित्रकूट : त्रिवेदी रामानन्द शास्त्री : १९६२.

८३-गुरुदक्षिणा : विनोदचन्द्र पाण्डेय 'विनोद' : १९६२.

८४- प्राणार्पण : बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' : १९६२.

८५- कौन्तेय-कथा :उदयशंकर भट्ट : १९६२.

८६- संशय की एक रात : नरेश मेहता : १९६२.

८७- स्वतंत्रता की बलिवेदी : जगन्नाथ प्रसाद मिलिंद : १९६२.

८८- महारानी लक्ष्मीबाई : श्यामनारायण प्रसाद : १९६२.

८९- रत्नावली : हरिप्रसाद 'हरि' : १९६३.

९०- कालदूत : काका 'हाथरसी' : १९६४.

९१- पाषाणी : शरणबिहारी गोस्वामी : १९६५.

९२- सौमित्र : रामेश्वरदयाल दुबे : १९६५.

९३- कुमारी : रामनारायण अग्रवाल : १९६५.

९४- मुक्तियज्ञ : सुमित्रानंदन पंत : १९६५.

९५- आत्मजयी : कुंवर नारायण : १९६५.

९६- [illegible] : शंकर सुल्तान पुरी : १९६६.

९७- चक्रव्यूह : विनोदचन्द्र पाण्डेय 'विनोद' : १९६७.

९८- प्रतिपदा : धरनापालसिंह शर्मा 'अरुण' : १९६८.

९९- सुनन्दा : सियारामशरण गुप्त : १९६८.

१००- रत्ना की बात : प्रेमनारायण टंडन : १९६८.

१०१- द्रोण : रामगोपाल 'रुद्र' : १९६८.

१०२- परीक्षित् : शांति नारायण 'राकेश' : १९६९.

१०३- कुटिया का राजपुरुष : शिवप्रसाद दीक्षित 'कुसुम' : १९६९.

१०४- कुमारी-नद : गोपाल प्रसाद व्यास : १९६९.

१०५- सुवर्णा : नरेन्द्र शर्मा : १९७०.

१०६- प्रवीर : केदारनाथ मिश्र प्रभात : १९७०.

१०७- शिवाजी : उमाकांत मालवीय : १९७०.

१०८- उत्तर-जय : नरेन्द्र शर्मा : १९७०.

१०९- भस्मांकुर : नागार्जुन : १९७०.

खण्डकाव्यों के वर्गीकरण के आधारों पर तथा वर्गीकरण पर संस्कृत तथा हिन्दी के काव्यशास्त्रियों ने कम ही ध्यान दिया है। संस्कृत आचार्यों ने खण्डकाव्य[1] के वर्गीकरण की समस्या ही नहीं उठायी है। हिन्दी के आचार्यों में डा० भगीरथ मिश्र ने खण्डकाव्यों के वर्गीकरण का आधार छन्द को माना है तथा इस आधार पर आपने खण्डकाव्य के दो

१- खंडकाव्य के दो भेद किये जा सकते हैं -- एक संघात अथवा एकार्थ खंडकाव्य जिसमें कि एक प्रकार के छंद में ही एक घटना या दृश्य का वर्णन किया जा सकता है और दूसरा अनेकार्थ खंडकाव्य, जिसमें अनेक प्रकार के छंदों में विविध भावों के साथ जीवन के एक अंश का चित्रण होता है -- काव्यशास्त्र : भगीरथ मिश्र, पृ० ६७.

रूप भी निर्धारित किये हैं -- (१) एकार्थ काव्य, (२) अनेकार्थ काव्य । जिस खण्डकाव्य में आद्यंत एक ही छन्द का प्रयोग रहता है वह एकार्थ तथा जिस खण्डकाव्य में अनेक छन्दों का प्रयोग होता है उसे आपने अनेकार्थ काव्य माना गया है । यद्यपि एकार्थ, अनेकार्थ जैसे शब्दों से छन्द का पूर्ण अर्थ बोध नहीं होता । खण्डकाव्य के स्वरूप का वर्गीकरण भी इसमें सुभीते से सम्पन्न होता नहीं, तथापि खण्डकाव्य-धारा के विभाजन का यह एक आधार बन सकता है ।

डा० शकुन्तला दुबे ने अन्त:प्रेरणा, स्वरूप, उद्देश्य आदि को काव्यविभाजन का मानदण्ड रखकर उपलब्ध खण्डकाव्य का वर्गीकरण दो वर्गों में किया है -- (१) लोक से उद्भुत लोकरंजन के लक्ष्य से निर्मित तथा (२) वैदी-विवेदी परम्परा से उद्भुत साहित्य मर्मज्ञ सहृदय पाठक को लक्ष्यीभूत करके रचे गये खण्डकाव्य । प्रथम प्रकार के खण्ड-काव्यों के आपने पुन: दो भेद किये हैं -- लोकदृष्टि प्रधान तथा व्यक्तित्व प्रधान । वीर भावात्मक तथा प्रेमप्रधान आदि खण्डकाव्यों को लोकदृष्टि प्रधान खण्डकाव्यों के उपभेद आपने स्वीकार किये तथा भक्ति प्रधान, प्रेमप्रधान आदि भेद व्यक्तित्व प्रधान खण्डकाव्यों के भी किये हैं ।

डा० दुबे जी ने यह वर्गीकरण प्राचीन काल से उपलब्ध होने वाले सभी खण्ड-काव्यों को ध्यान में रखकर किया है । आधुनिक काल के खण्डकाव्यों में रूप एवं भाव की दृष्टि से खूब परिवर्तन हुआ है । लोक से उद्भुत लोकरंजन के लक्ष्य से निर्मित तथा वैदी-विवेदी परम्परा से उद्भुत तथा साहित्य मर्मज्ञ पाठकों के लिए निर्मित आदि वर्गीकरण आधुनिक काल के रूप एवं भाव में विविधताओं के साथ अवतीर्ण खण्डकाव्यों में लागू नहीं हो सकता । आधुनिक युग के अनुकूल परिवेश में ही आधुनिक खण्डकाव्यों के वर्गीकरण का मानदण्ड-निर्धारण उचित है ।

डा० गोपालदत्त सारस्वत[2] ने खण्डकाव्यों के वर्गीकरण के चार मानदण्ड नि-

---

१- काव्य रूपों का मूल स्रोत और उनका विकास : डा० शकुन्तला दुबे, पृ० १४८.

२- आधुनिक हिन्दी काव्य में परम्परा तथा प्रयोग : डा० गोपालदत्त सारस्वत ।

धारित किये हैं -- चरित्रनायक, आनुबन्ध कथा, रस तथा वस्तुवर्णन। निश्चय ही ये चारों ऐसे तत्त्व हैं जिनके आधार पर आधुनिक खण्डकाव्य-परम्परा का विभाजन हो सकता है।

डा० निर्मला जैन ने काव्य के आकार को दृष्टिपथ में रखकर उसके भेद दो किये हैं -- महाकाव्यात्मक खण्डकाव्य, लघुप्रबन्धात्मक खण्डकाव्य। केवल आकार को किसी भी काव्य रूप के वर्गीकरण का मानदण्ड मान लेना उतना समीचीन नहीं जँचता।

वस्तुतः प्राचीन खण्डकाव्यधारा के वर्गीकरण से अलग वर्गीकरण ही आधुनिक खण्डकाव्यों का हो सकता है। खण्डकाव्य की प्राचीन परम्परा से रूप एवं भाव दोनों ही दृष्टियों से इसमें बड़ा साम्य-वैषम्य दिखायी पड़ते हैं, यद्यपि काव्य के मूलभूत तत्त्व एवं लक्षण उसमें भी विद्यमान है।

आधुनिक काल में प्रणीत खण्डकाव्यों के काल विभाजन एवं नामकरण का कार्य प्रथम अध्याय में हो चुका है। उसमें आधुनिक खण्डकाव्य धारा का विभाजन तीन भागों में हुआ है --

छायावाद पूर्व युग, छायावादी युग तथा छायावादोत्तर युग। आधुनिक खण्डकाव्य-धारा का प्रवृत्तिगत वर्गीकरण भी उससे संभव हुआ है। अस्तु, आगे खण्डकाव्य-धारा का विभिन्न काव्यतत्त्वों के आधार पर वर्गीकरण प्रस्तुत है।

खण्डकाव्य का सबसे महत्त्वपूर्ण तत्त्व है कथावस्तु। कथावस्तु के आधार पर इस काल में विनिर्मित खण्डकाव्यों का वर्गीकरण दो प्रकार से हो सकता है --

१- प्रख्यात।

२- काल्पनिक।

१- आधुनिक हिन्दी काव्य में रूप विधाएं ; डा० निर्मला जैन।

प्रख्यात कथावस्तुओं पर आधारित खण्डकाव्य दो प्रकार के मिलते हैं ।

(अ) पौराणिक ।

(आ) ऐतिहासिक ।

आधुनिक काल के पौराणिक खण्डकाव्यों का विभाजन फिर अनेक भेदों में होता है — (१) महाभारत के आख्यान एवं उपाख्यानों पर आधारित खण्डकाव्य ।

(२) रामायण कथा पर आधारित खण्डकाव्य ।

(३) भागवत, जैसे अन्य पुराणों पर आधारित खण्डकाव्य ।

(४) बाइबिल कथा पर आधारित खण्डकाव्य ।

(५) मुस्लिम सांस्कृतिक पुराण पर आधारित खण्डकाव्य ।

प्रथम में जयद्रथ-वध, द्रौपदी-चीर-हरण, अभिमन्यु का आत्मबलिदान, शकुंतला, कीचक-वध, बक-संहार, वन-वैभव, सैरन्ध्री, हिडिम्बा, शल्य-वध, द्रौपदी, सुकन्या, पांचाली, [illegible], गुरुदक्षिणा, ध्रुव, सतीसावित्री, दानवीर कर्ण, अभिमन्यु-वध, अभिमन्यु पराक्रम, चक्रव्यूह, कौन्तेय-कथा, प्रवीर, कर्ण, रश्मिरथी, कुरुक्षेत्र आदि काव्य आ जाते हैं ।

दूसरे वर्ग में पंचवटी, चित्रकूट, कैकेयी, अग्निपथ, वनागमन, ऊर्मिला, लक्ष्मण-शक्ति, सौमित्र, संशय की एक रात जैसे खण्डकाव्यों का स्थान है ।

भागवत पुराण पर आधारित खण्डकाव्यों में उद्धवशतक, प्रयाण, परीक्षित जैसे काव्य, कठोपनिषद पर आधारित ग्रन्थों में 'आत्मजयी', मार्कंडेय पुराण पर आधारित ग्रन्थों में शक्ति, रागकाली आदि खण्डकाव्य आ जाते हैं । बाइबिल की पौराणिक कथा पर आधृत खण्डकाव्य है 'अमृतपुत्र' तथा मुस्लिम धर्मपुराण पर आधारित है काबा और कर्बला नामक खण्डकाव्य ।

ऐतिहासिक खण्डकाव्य भी दो प्रकार के मिलते हैं -- (१) भारतवर्ष के प्राचीन इतिहास पर आधारित तथा (२) आधुनिक इतिहास पर आधारित खण्डकाव्य। प्रथम में रंग में भंग, मौर्यविजय, महाराणा का महत्व, वीर हमीर, चित्तौड़ की चिता, गौरा-वध, अशोक, सिंहद्वार, विकट-भट, मेरी का जौहर, कोणार्क, अयोध्या, सुनन्दा, प्रतिपदा आदि खण्डकाव्य आ जाते हैं। दूसरे विभाग में आत्मोत्सर्ग, तांत्या टोपे, वीर लाल पद्मधर, महारानी लक्ष्मीबाई, प्राणार्पण, कारा, मुक्तियज्ञ, आदि खण्डकाव्यों का स्थान है।

काल्पनिक खण्डकाव्य अनेक प्रकार के लिखे गये -- (अ) राष्ट्रीयता मूलक, (आ) प्रेममूलक (इ)सामाजिक (ई) विचारात्मक तथा (उ) हास्यात्मक।

राष्ट्रीयतामूलक खण्डकाव्यों में मिलन, पथिक, स्वप्न, अनाथ, अनासक्ति जैसे काव्य तथा प्रेममूलक खण्डकाव्यों में प्रेम पथिक, एकांतवासी योगी, ग्रंथि, आंसू सुहाग कामिनी जैसे काव्य, सामाजिक के अन्तर्गत गृहलक्ष्मी, मगध की बेटी, विचारात्मक में चाँदनी रात और अजगर तथा हास्यात्मक में काकबूत एवं अनारी-भर का स्थान है।

वर्ण्यविषय के आधार पर आधुनिक खण्डकाव्यों का और एक वर्गीकरण भी हो सकता है। जिन खण्डकाव्यों में कथा या घटना की प्रधानता है वे घटनाप्रधान वर्ग में रखे जा सकते हैं। आधुनिक काल में घटनाओं से अधिक प्राधान्य पात्रों के चरित्रविश्लेषण को प्राप्त हुआ है। चरित्र विश्लेषण को प्रमुखता देकर लिखे गये खण्डकाव्य चरित्र-विश्लेषण प्रधान अथवा विचार प्रधान खण्डकाव्यों के अन्तर्गत समाहित होते हैं। जिन खण्डकाव्यों में भाव प्रमुख हैं, वे भाव प्रधान खण्डकाव्य के वर्ग में आ जाते हैं, प्रतीकों को मुख्यता देकर लिखे गये खण्डकाव्य प्रतीकात्मक खण्डकाव्यों की कोटि में आ जाते हैं। हास्यप्रधान खण्डकाव्य भी अपना अलग स्थान जमा लेते हैं। कथा या घटना प्रधान खण्ड-काव्यों के विभाग में हरिश्चन्द्र, जयद्रथ-वध, रंग में भंग, मौर्यविजय, द्रौपदी-चीर-हरण,

मिलन, पथिक, विश्राम, अनाथ, विकट भट, अभिमन्यु का आत्मबलिदान, अभिमन्यु पराक्रम, अरगढ़ की बेटी, कोणार्क, लक्ष्मण शक्ति, गुरुदक्षिणा, कर्ण, हिडिम्बा, वन-वैभव, विकट-भट, प्रवास, गुरुकुल, वीर लाल पत्थर, स्वतंत्रता की बलिवेदी, तात्या टोपे, महारानी लक्ष्मीबाई, कौन्तेय-कथा, मल्यांकुर जैसे खण्डकाव्य आ जाते हैं।

चरित्र चित्रण प्रधान खण्डकाव्यों में कुणीवार, नहुष, नकुल, कुरुक्षेत्र, कोशल का काल, तप्तगृह, चांदनी रात और अजगर, अग्निपथ, कृशानु अमृतपुत्र, संशय की एक रात, रत्नावली, पाषाणी, आत्मजयी, रत्ना की बात, परीक्षित आदि का स्थान है।

एकान्तवासी योगी, प्रेमपथिक आंसू, ग्रंथि, सुहाग आदि काव्य भावप्रधान खण्डकाव्यों की कोटि में आते हैं। प्रतीकात्मक खण्डकाव्यों में द्रौपदी, उदयन आदि का तथा हास्यप्रधान काव्यों में काकदूत एवं बनारसी-बार स्थान पा लेते हैं।

खण्डकाव्यों का वर्गीकरण रस के आधार पर भी हो सकता है।

(१) एक रसात्मक

(२) बहुरसात्मक.

जिन खण्डकाव्यों में समग्र रूप में एक ही रस की अभिव्यंजना हुई है उन्हें एक रसात्मक के अन्तर्गत तथा जिन खण्डकाव्यों में समग्र रूप में अनेक रसों की संयोजना हुई है उन्हें बहु-रसात्मक में रखा गया है। एकरसात्मक खण्डकाव्यों के अन्तर्गत प्रेम-पथिक, सुहाग, कामिनी, आंसू, ग्रंथि, कौंच-वध, भोगीविलय, रश्मिरथी, कुरुक्षेत्र, शिवाजी, तात्या टोपे, वीरलाल पत्थर, तप्तगृह, कोणार्क, मल्यांकुर, अग्निपथ, मुक्ति, प्राणार्पण, आत्मोत्सर्ग, विश्राम, अनाथ आदि आते हैं।

बहुरसात्मक खण्डकाव्य है मिलन, पथिक, स्वप्न, चित्तौड़ की चिता, चक्रव्यूह, रंग में भंग आदि जिनमें करुण, वीर एवं शृंगार रसों की समग्र अभिव्यक्ति हुई है।

काव्य में अभिव्यंजित मुख्य रस के नाम पर खण्डकाव्यों का और एक वर्गीकरण भी संभव है --

(अ) शृंगार रसप्रधान खण्डकाव्य :

(क) संयोगशृंगार प्रधान : उदाहरण हैं प्रेम-पथिक, सुहाग, कामिनी आदि ।

(ख) विप्रलंभ शृंगार प्रधान खण्डकाव्य : उदाहरण हैं आँसू, ग्रंथि, रत्ना की बात आदि ।

(आ) वीररस प्रधान खण्डकाव्य : जैसे -- मौर्यविजय, कौन्तेय-कथा, क्षात्र पौरुष, महारानी लक्ष्मीबाई, प्रवीर, वीरबाल पद्मधर, तांत्या टोपे, गुरुदक्षिणा, युद्ध आदि ।

(इ) करुणारस प्रधान खण्डकाव्य : कौणार्क, भस्मांकुर, अग्निपथ, तप्तगृह, प्राणार्पण, स्वतंत्रता की - बलिवेदी, मुक्तिका, अनाथ, किसान, आत्मोत्सर्ग इत्यादि खण्डकाव्य इस वर्ग के हैं ।

(ई) हास्य रस प्रधान खण्डकाव्य : काकदूत एवं अनारी-नार इस प्रकार के हैं ।

सर्ग विधान को मानदण्ड मानकर भी खण्डकाव्यों का वर्गीकरण किया जा सकता है । हिन्दी के आधुनिक खण्डकाव्य या तो सर्गबद्ध होकर विरचित हैं (इसके अन्तर्गत दूसरे नामों पर काव्यवस्तु का जो विभाजन हुआ है, यथा सोपान, भाग, उच्छ्वास आदि सब आ जाते हैं ।) या, सर्गरहित । सर्गविधान के आधार पर आधुनिक हिन्दी खण्डकाव्यों का विभाजन चार रूपों में हो सकता है --

(अ) सर्गबद्ध खण्डकाव्य ।

(आ) सर्गमुक्त अथवा सर्गरहित खण्डकाव्य ।

(इ) जिसमें सर्गविधान नहीं किन्तु वर्णन संकेत हों ।

(ई) जिसमें सर्गविधान एवं वर्णन संकेत दोनों हों ।

सर्गबद्ध खण्डकाव्यों में मिलन, पथिक, स्वप्न, रश्मिरथी, गुरुदक्षिणा, कौन्तेय-कथा, तप्त-गृह, चित्तौड़ की चिता, वीर हमीर, प्रवीर, कर्ण, महारानी लक्ष्मीबाई, रणचण्डी,

गोराबध, कोणार्क, चक्रव्यूह, भूमिजा, प्रह्लाद, कैकेयी, जयद्रथ-वध, मौर्यविजय, नकुल, नहुष, सिद्धराज, द्रौपदी, सिंहद्वार, सौमित्र, प्राणार्पण, रूपछाया, लक्ष्मणशक्ति जैसे काव्य आ जाते हैं तथा सर्गमुक्त खण्डकाव्यों में पंचवटी, बरगद की बेटी, उपरम्भ, रत्ना की बात, चाँदनी रात और अजगर, गुरुदक्षिणा, वन-विहार, कारा, स्वतंत्रता की बलिवेदी, रत्ना की बात, वीरबाला पद्मधर, मत्स्यांकुर आदि काव्यों का स्थान है।

सर्गरहित कतिपय खण्डकाव्यों में वर्ण्यविषय अथवा प्रसंग के अनुसार वस्तु का विभाजन विभिन्न शीर्षकों में हुआ है। ऐसे खण्डकाव्य एक अलग वर्ग में रखे जाने योग्य हैं। इस प्रकार के खण्डकाव्यों में विधान, सुहाग, अजित, अर्धनारीश्वर, शिवाजी, विषपान जैसे काव्य आ जाते हैं।

सर्गबद्ध काव्यों में भी 'कौमुदी-कथा', 'लक्ष्मण-शक्ति', नहुष, जैसे खण्डकाव्य ऐसे हैं जिनमें विभिन्न शीर्षकों में प्रसंगानुसार वर्णन संकित किये गये हैं। अतः ये खण्ड-काव्य चौथे वर्ग में आ जाते हैं जिनमें सर्गविधान एवं शीर्षकांकित दोनों होते हैं।

छन्द-विधान भी खण्डकाव्यों के वर्गीकरण का आधार बन सकता है। काव्य में प्रयुक्त छन्दों के आधार आधुनिक काल में निर्मित खण्डकाव्यों का निम्नलिखित विभाजन हो सकता है।

(अ) एकछन्दात्मक खण्डकाव्य

(आ) बहुछन्दात्मक खण्डकाव्य, एवं

(इ) मुक्तछन्दात्मक खण्डकाव्य।

मिलन, पथिक, स्वप्न, महाराणा का महत्त्व, आँसू, ग्रन्थि, मौर्यविजय, रंग में भंग, सुनंदा, बरगद की बेटी, अमित, मुक्तियज्ञ, शिवाजी, नहुष, पंचवटी, जयद्रथ वध, वीर हमीर, अर्धनारीश्वर सिद्धराज, उदयास्त प्रेमपथिक जैसे खण्डकाव्य एकछन्दात्मक हैं।

महाख्यानात्मक खण्डकाव्य में प्रवीर, रश्मिरथी, महारानी लक्ष्मीबाई, द्रोण, चक्रव्यूह, किसान, शकुन्तला, अनाथ, सौमित्र, कचोच, आदि आ जाते हैं ।

मुक्तकाख्यानात्मक खण्डकाव्य हैं कौशल का काल, तुलसीदास, तप्तगृह, परीक्षित, कुलकुल, मधुप्रिया, संशय की एक रात, पल्माझुर आदि ।

इस काल के खण्डकाव्य ब्रजभाषा में तथा खड़ीबोली में विरचित हैं । उजड़-ग्राम, प्रेम-पथिक, हरिश्चन्द्र, उद्धवशतक, एवं सूखरी को छोड़कर इस काल में विरचित अन्य समस्त खण्डकाव्य खड़ीबोली हिन्दी के हैं ।

आधुनिक खण्डकाव्य प्रणेताओं ने अपने खण्डकाव्यों के लिए भिन्न-भिन्न वर्णन शैलियों का प्रयोग किया है । वर्णन शैली की दृष्टि से भी आधुनिक खण्डकाव्यों का वर्गीकरण संभव है । यथा —

(अ) वर्णनात्मक अथवा कथात्मक शैली के खण्डकाव्य ।

(आ) नाटकीय शैली के खण्डकाव्य ।

(इ) प्रगीत शैली के खण्डकाव्य एवं

(ई) मनोविश्लेषणात्मक शैली के खण्डकाव्य ।

आधुनिक काल में विरचित अधिकांश खण्डकाव्य प्रथम वर्ग में समाविष्ट हो जाते हैं । जैसे — मौर्यविजय, महाराणा का महत्व, जयद्रथ वध, रंग में भंग, अनाथ, किसान, कारा, वरगद की बेटी, गृहलक्ष्मी, प्रेमपथिक, स्वतंत्रता की बलिवेदी, पल्माझुर ।

नाटकीय शैली में निर्मित खण्डकाव्यों में मधुप्रिया, शिवराज, संशय की एक रात आत्मजयी, उर्वशी जैसे काव्य आ जाते हैं ।

प्रगीत शैली में विरचित हैं आंसू, ग्रंथि, तूफान, कामिनी जैसे खण्डकाव्य तथा प्रगीत मुक्तक की शैली में 'उद्धवशतक' रचना गया है ।

मनोविश्लेषणात्मक शैली में विरचित खण्डकाव्यों में पाषाणी, सन्तुष्ट, महुन, रत्ना की बात, चाँदनी रात और अजगर आदि खण्डकाव्य सम्मिलित हैं।

अस्तु, विभिन्न काव्यवस्तुओं के आधार पर आधुनिक काल में प्रणीत खण्डकाव्यों के वर्गीकरण का प्रयास ही यहाँ हुआ है।

कालक्रम एवं प्रवृत्ति के अनुसार वर्गीकरण के अतिरिक्त, विभिन्न खण्डकाव्यों के तत्त्व ही ऐसे मानदण्ड हैं जो खण्डकाव्यों के वर्गीकरण के आधार बन सकते हैं। आधुनिक खण्डकाव्यों में परिलक्षित भाव एवं रूप वैविध्य के कारण ही यह संभव हो सका है। उपर्युक्त स्तर एवं वर्गीकरण के अन्तर्गत आधुनिक काल में विरचित समस्त खण्डकाव्य समाहित भी हो जाते हैं। अतएव आधुनिक खण्डकाव्यधारा के वर्गीकरण का सफल आधार उनमें अन्तर्लीन विभिन्न तत्त्व ही हैं।